गुजरात से हिंदी की सम्पूर्ण साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका

ISSN - 2347 - 8764

विश्व गाथा

वर्ष : 12 अप्रैल-मई-जून 2025 अंक नंबर : 2

मुखपृष्ठ चित्र - अजय कुमार

12 वर्ष

संपादक : पंकज त्रिवेदी

अभिनंदन श्री विनोद कुमार शुक्ल (ज्ञानपीठ सम्मान)

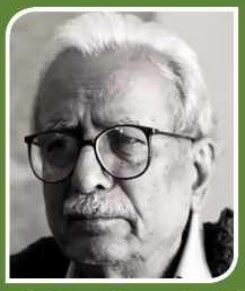

भारतीय साहित्य में 59वाँ सर्वोच्च ज्ञानपीठ पुरस्कार वर्ष 2024 के लिए श्री विनोद कुमार शुक्ल को मिला। विनोद कुमार शुक्ल (जन्म 1 जनवरी 1937) हिंदी भाषा के एक साहित्यकार हैं। शुक्ल ने उपन्यास एवं कविता विधाओं में साहित्य सृजन किया है। उनका पहला कविता संग्रह 1971 में लगभग 'जय हिन्द' नाम से प्रकाशित हुआ। 1979 में नौकर की कमीज़ नाम से उनका उपन्यास आया जिस पर फ़िल्मकार मणिकौल ने इसी से नाम से फिल्म भी बनाई।

विनोद कुमार शुक्ल आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित कवि, उपन्यासकार, लघुकथाकार एवं निबंधकार हैं। शुक्ल जी वर्ष 1994 से 1996 तक निराला सृजनपीठ में अतिथि साहित्यकार रहे हैं। वहीं उनकी कई रचनाओं का भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। साहित्य के क्षेत्र में अपना विशेष योगदान देने के लिए उन्हें 'राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'हिंदी गौरव सम्मान' व 'रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार' आदि से नवाजा जा चुका हैं। इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय साहित्य में उपलब्धि के लिए उन्हें वर्ष 2023 में 'PEN/ नाबोकोव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। इन सब के बावजूद विनोद जी अपने कटु अनुभवों के चलते अब किताबें छपवाने से विरक्त भी रहें। फिर भी उनके साहित्यिक प्रदान को नकार नहीं सकते। रचनाकार से भी बड़ी उनकी रचना होती है, शुक्ल जी के साहित्य ने ही उन्हें इतना बड़ा सम्मान दिलाया। उन्हें बधाई।

कमल किशोर गोयनका को श्रद्धांजलि

प्रसिद्ध साहित्यकार कमल किशोर गोयनका का निधन मंगलवार को 86 वर्ष की आयु में हुआ। उनके निधन को साहित्य जगत में गहरी क्षति माना गया है। गोयनका ने प्रेमचंद साहित्य पर व्यापक शोध किया और हिंदी साहित्य में अपना नाम शिखर पर स्थापित किया। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

गुजराती कवि रमेश आचार्य

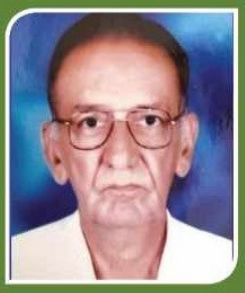

गुजराती कवि रमेश आचार्य का निधन 25 मार्च 2025 को हुआ। अत्यंत संवेदनशील एवं सालस स्वभाव के इस कवि को प्रयोगशील एवं युवा कविओं के प्रोत्साहक के रूप में देखा जाता था। उन्होंने मोनो इमेज, हाइकु विधा से प्रलंब जापानीस काव्य स्वरूप तांका में लिखी रचनाओं से गुजराती साहित्य में अलग पहचान बनाई। उनकी एक कविता 'महाभिनिष्क्रमण' चर्चित रही थी। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

क्रिकेटर सलीम दुर्रानी नहीं रहे

भले ही मंसूर अली ख़ान पटौदी को नवाब कहा जाता हो, लेकिन भारतीय क्रिकेट के असली नवाब सलीम दुर्रानी थे । सलीम दुर्रानी की नवाब पटौदी से कभी नहीं बनी, इसलिए वे टीम के अंदर बाहर होते रहे; लेकिन सलीम दुर्रानी, मंसूर अली ख़ां पटौदी के सामने कभी नहीं झुके। कहा जाता था कि सलीम दुर्रानी दर्शकों की मांग पर छक्के लगाने के लिए मशहूर थे। सलीम दुर्रानी के क्रीज पर आते ही स्टेडियम में शोर मच जाता था - वी वांट सिक्सर । और गेंद सीमा रेखा के पार हो जाती थी ।

वे किसी फ़िल्म अभिनेता की तरह सुंदर थे। उन्होंने क्रिकेट के बाद बॉलीवुड में भी हाथ आजमाया और चरित्र इत्यादि कई फ़िल्मों में नायक की भूमिका की। उस ज़माने में परवीन बॉबी के साथ सलीम दुर्रानी का अफेयर चर्चित हुआ था । सलाम सलीम दुर्रानी, विनम्र श्रद्धांजलि !

अप्रैल-मई-जून 2025

वर्ष – 12 * अंक – 2

संपादक

पंकज त्रिवेदी

*

मुखपृष्ठ

अजय कु

*

मुखपृष्ठ-3

वत्सला दवे

*

सदस्यता

वार्षिक 300/- रुपये / दो वर्ष 600/- रुपये

5-वर्ष : 1500/- रुपये

*

सिर्फ सदस्यता प्राप्त करने हेतु नंबर

Paytm - Google Pay

09662514007

*

आजीवन सदस्यता

11,000/- रुपये

(डाक खर्च सहित)

*

विश्वगाथा C/o. पंकज त्रिवेदी

गोकुलपार्क सोसायटी,

80 फीट रोड, सुरेन्द्रनगर 363002

(गुजरात-भारत))

*

vishwagatha@gmail.Com

*

Mo: **Calling** - &

What's app

09662514007

*

सहायक : श्रेणिक शाह

मार्गदर्शक : बिन्दु भट्ट / भावना भट्ट

अनुक्रमणिका

संपादकीय : पंकज त्रिवेदी - 05

*

आपके पत्र– 4

आलेख :

महेश शर्मा - 06
आशीष दशोत्तर - 09
शुभदा पाण्डेय - 11
डॉ. छत्रसिंह काल्या तडवी - 13
प्रो. आर. के. जैन - 16

कहानी :

मावजी महेश्वरी (गुजराती)- 17
डॉ. वंदना गुप्ता - 19
सुशांत सुप्रिय - 23
प्रतिभा सिंह - 25
पूजा गुप्ता - 28
कान्ता रॉय - 30
विजय सोनी (गुजराती)- 35
देवेन्द्र कुमार पाठक - 41
अमृता पांडे - 47

ललित निबंध :

गोविंद गुंजन - 50

कविता :

वीरेन्द्र नारायण झा - 53
बिर्ख खड़का डुवर्सेली - 54
व्यग्र पाण्डे - 54
द्वारका प्रसाद तापडिया - 54
सुधीर कुमार सोनी - 55
कमलेश झा - 56
शिल्पी गुप्ता - 57

व्यंग्य :

श्रीकांत चौधरी - 58
डॉ. बी. एल. आच्छा - 60
डॉ. दलजीत कौर - 62
अनीता श्रीवास्तव - 63
डॉ. मुकेश 'असीमित' - 64

समीक्षा :

मुकेश दुबे - 65
कान्ता रॉय - 66
प्रमोद ताम्बट - 67
मधुर कुलश्रेष्ठ - 69
शैली बक्षी खड़कोतकर - 71
श्रवण कुमार उर्मिलिया - 72

व्यक्ति विशेष :

प्रो. नव संगीत सिंह - 74

यात्रा वृत्तांत :

कला कौशल - 76

संस्मरण :

डॉ. महिमा श्रीवास्तव - 79
शशि सिंह राजपूत - 80

लघुकथा :

लियाकत हुसेन धाराणी-27
मीता दास-81

झकास :

धर्मपाल महेन्द्र जैन - 82

'विश्व गाथा' में सभी साहित्यकारों का स्वागत है। आप अपनी मौलिक रचनाएँ ही भेजें, साथ में अपना चित्र और परिचय भी। रचनाएँ भेजने से पहले, पूर्व अंकों का अवलोकन जरूर करें। प्रकाशित रचनाओं के विचारों का संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा। विवादित या अन्य सामग्री चयन अधिकार संपादक का होगा। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक भुगतान नहीं होगा। **पत्रिका में प्रकाशित सामग्री रचनाकारों के निजी विचार हैं, संपादक या संपादन मंडल-प्रकाशक का उनसे सहमत होना बिलकुल अनिवार्य नहीं है। यह अवैतनिक और अव्यावसायिक पत्रिका है।**

~❀~

© Editor, Printer & Publisher : Pankajbhai Amrutlal Trivedi , Gokulpark Society, 80 Feet Road, Surendranagar-363002 (Gujarat) Owner by : Pankajbhai Amrutlal Trivedi, Printed at Nidhiresh Printery, 23, Medicare Complex, Nr. A-One Garage, Surendranagar. Published at Gokulpark Society, 80 Feet Road, Surendranagar-363002 (Gujarat) Jurisdiction : Surendranagar (Gujarat)

आपके पत्र

आदरणीय संपादक महोदय,

'लोक आस्था का महापर्व छठ' आलेख को प्रतिष्ठित व लोकप्रिय साहित्यिक पत्रिका 'विश्व गाथा' में स्थान देकर मुझे प्रोत्साहित करने के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

भगवान भास्कर और छठ माता जी की कृपा से यह पत्रिका लोकप्रियता के उच्चतम शिखर पर विराजमान हो, इसी मंगल कामना के साथ नवीनतम अंक हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि समस्त झंझावातों को झेलते हुए पत्रिका के सतत प्रकाशन का 11-सफलतम वर्ष पूर्ण कर 12वें वर्ष में प्रवेश करना, निश्चित रूप से आपके संकल्प और समर्पण का परिणाम है। पत्रिका दीर्घायु हो, यही कामना है। मेरी रचना द्वारा छठ व्रत की महिमा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए पुनः धन्यवाद। शुभकामनाओं सहित, सादर, **विनोद प्रसाद** सरस्वती विहार, अम्बेडकर पथ, पो.- बी भी कालेज, पटना-800014 (बिहार)

*

आदरणीय पंकज जी

विश्वगाथा का जनवरी-मार्च 2025 अंक प्राप्त हुआ। व्यस्तता की वज़ह से पढ़ने और फिर पत्र लिखने में विलंब हुआ। पत्रिका के संपादकीय में आपके द्वारा जीवनी, संस्मरण, और आत्मकथा के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर बहुत अच्छा लगा। आपने बहुत सरल भाषा में समझाने का सराहनीय प्रयास है। नए लेखकों के लिए यह मार्गदर्शन करेगा। संस्मरण विशेषांक में विभिन्न लेखकों के अनुभवों से अवगत होने का और उनसे बहुत कुछ जानने और सीखने को मिला। सूर्यबाला जी द्वारा लिखित एक नन्ही सहयात्री में उन्होंने एक मर्मस्पर्शी विषय पर चिंता व्यक्त की, एकल परिवार और माता-पिता के अलगाव की वज़ह से मासूम बच्चो के अंतर्मन पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव सच में चिंता और विचार विमर्श का विषय है। राजनीतिक हस्तियों में आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी की मैं प्रशंसक रही हूँ हालांकि उस राजनीतिक दल की विचारधारा से मैं स्वयं को नहीं जोड़ती पर उनके बारे में राजशेखर व्यास जी का संस्मरण पढ़कर अच्छा लगा। डॉ जगदीश पंत कुमुद जी का संस्मरण, किताबों की जल समाधि पढ़कर मुझे अपने साथ घटित एक बात याद आ गयी। किताबों से बच्चों जैसा स्नेह हो जाता है और बड़ा बुरा लगता है जब कोई पढ़ने के लिए मांगे और फिर लौटाये ना, या फिर माता जी बिना पूछे एक दिन सब कबाड़ी को बेंच दें।l पत्रिका बिल्कुल समय पर पहुंच जाती है इसके लिए आपका आभार।

शशि सिंह राजपूत

(दिल्ली)

विश्व गाथा

प्रकाशन सन्दर्भ जानकारी

द पेपर रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज़ पेपर सेन्ट्रल रूल्स-1955 के तहत

*

विश्व गाथा : (त्रैमासिक पत्रिका की जानकारी)

सामयिक का नाम : विश्वगाथा

सामयिक की भाषा : हिन्दी

प्रकाशन की अवधि : त्रैमासिक

*

आर.एन.आई.नंबर: RNI-GUJHIN/ 2013/61884

पत्रिका की कीमत : 50 रुपये

*

संपादक, प्रकाशक, मालिक : पंकज त्रिवेदी

मुद्रक : निधिरेश प्रिंटरी

राष्ट्रीयता : भारतीय

मुद्रण स्थान : 23, मेडीकेर कोम्प्लेक्स, सुरेन्द्रनगर-363002

प्रकाशन स्थल : गोकुलपार्क सोसायटी, 80 फुट रोड, सुरेन्द्रनगर– 363002 (गुजरात) भारत

*

मैं पंकज त्रिवेदी घोषणा करता हूँ कि उपर्युक्त बताई गई माहिती मेरी जानकारी में है और मान्यता के अनुसार सही है।

दिनांक: 31/03/2025 पंकज त्रिवेदी